संपादकीय

यह साल भी चला चली की बेला में है, इस वर्ष मानव जाति अपने ही द्वारा विकसित किए गए संकर प्रजाति के कोविड कोराना-19 के क्षूद्र व अदृश्यप्राय विषाणु से संभवतः अब तक के इतिहास का सबसे कठिन युद्ध का सामना कर रही है। अन्य युद्धों की भाँति यह युद्ध भी किसी समय-सारिणी, कैलेंडर अथवा पंचांग के अनुशासन का अनुपालन करता नहीं दिख रहा है, सो यह जंग अगले कैलैंडर साल भी जारी रहेगी यह तो लगभग तय है।

अब आने वाले साल की झोली में हमारे लिए क्या है, इसे लेकर हर वर्ष कई तरह की भविष्यवाणियाँ की जाती हैं। लगभग सभी कैलेंडर तथा पंचांगों में आने वाले वर्ष को लेकर व्यापार, राजनीति, आर्थिक घटनाक्रमों सहित जीवन के हर पहलू की भविष्यवाणियाँ की जाती हैं। साल समाप्त होते न होते, जो हुआ सो हुआ की तर्ज पर पिछली भविष्यवाणियाँ भुलाकर नए साल का कैलेंडर तथा उसकी भविष्यवाणियाँ तैयार कर फिर से परोस दी जाती हैं। ज्योतिष शास्त्र की विभिन्न शाखाएँ, खगोल विज्ञान आदि जटिल वैज्ञानिक विषय हैं। इनका बिना समुचित, समग्र अध्ययन किए सही निष्कर्ष निकालना बहुत दुष्कर है। दरअसल भविष्य ने अपने गर्भ में क्या छिपा रखा है, इसको लेकर कयास तो अनगिनत लगाए जा सकते हैं, किंतु ठोस दावे के साथ, कोई भी नजूमी, ज्योतिषी, भविष्यवक्ता कुछ भी नहीं कह सकता। समय की तीनों दशाओं, भूत, भविष्य तथा वर्तमान की अवधारणा को भले ही आइंस्टीन तथा भावी वैज्ञानिक कालचक्र का भ्रमजाल साबित कर दें, पर सच तो यही है कि, मानव भविष्य के पर्दे के पीछे छिपी घटनाओं को जानने के लिए सदैव अति उत्सुक रहा है, और भविष्य के परदे के उस पार झाँकने के लिए मानव ने अब तक जितने जतन किए हैं, शायद किसी और लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इतने उद्यम कभी नहीं किए गए। विश्व में ऐसे सैकड़ों लोग हुए हैं जिन्होंने भविष्य के घटनाक्रम और परिवर्तन को लेकर कई प्रसिद्ध भविष्यवाणियाँ की हैं, उनमें से कुछेक सच भी हुई हैं तो बहुसँख्य झूठ भी। हमारा देश तो खैर ज्योतिषियों और बाबाओं के लिए विश्वविख्यात है ही पर विज्ञान पूजक विदेशों में भी भविष्यवक्ताओं की बड़ी पूछ परख होती रही है। भविष्य दर्शन करने-कराने के लिए मनुष्य ने ज्ञानेंद्रियों के द्वारा महसूस किए जा सकने वाले समस्त जड़-जंगम, दृश्य-अदृश्य, ग्रह-नक्षत्र, बादल-समुंदर, नदी-पहाड़, पेड़-पौधे,पक्षी, जीव-जँतु, कीड़े-मकोड़े यहाँ तक कि मल-मूत्र, सपनों और छाया तक का उपयोग कर लिया है, पर है आज भी खाली हाथ। आज भी भविष्य को बूझने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के एक से बढ़कर एक अजीबोगरीब साधन उपयोग में लाए जाते रहे हैं।भारत के कस्बों में सड़क पर तोता ज्योतिषी से भविष्य बँचवाते लोगों को देखकर, भारत को पिछड़ा साबित करने वाले लोगों को शायद यह भी ध्यान में होगा कि कुछ सालों पहले विश्वकप फुटबॉल के मुकाबलों में आठ मैचों में जीतने वाली टीम की एकदम सही-सटीक भविष्यवाणी एक 'पाल बाबाजी' करते थे जो कि जलचर अष्टपाद यानी कि ऑक्टोपस थे। पिछले वर्षों पाल आक्टोपस के निधन के बाद उन पर एक बहुचर्चित फिल्म भी बनी थी, यह अलग बात है कि एक बहुत बड़ा वर्ग मानता है, कि 'पाल बाबा' का यह सुनियोजित ड्रामा, केवल फुटबॉल की भीषण सट्टेबाजी के मद्देनजर रचा गया था।

कोरोना-काल में लोक-कलाकार सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं

(सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक **ऋषि कुमार वशिष्ठ** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आता है जो देश भर में शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षणिक प्रशासकों और छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करता है और छात्रों को संस्कृति के महत्व के प्रति जागरूक करता है। इसकी स्थापना मई, 1979 में श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय तथा डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा की गई थी। इस केंद्र का मुख्य सैद्धांतिक उद्देश्य बच्चों को सात्विक शिक्षा प्रदान कर उनका भावात्मक व आध्यात्मिक विकास करना है। इसका मुख्यालय दिल्ली में है।

ऋषि कुमार वशिष्ठ
निदेशक
सी.सी.आर.टी., दिल्ली

कुसुमलता सिंह
प्रधान संपादक, ककसाड़

प्र. क्या आप मानते हैं कि मानवीय गरिमा के लिए सांस्कृतिक चेतना और कला का प्रवाह आवश्यक है?

उ. जी हाँ। मानवीय गरिमा के लिए सांस्कृतिक चेतना और कला का प्रवाह अत्यंत आवश्यक है क्योंकि सांस्कृतिक चेतना और कला मानवीय जीवन का प्राण है। यह मानव को संवेदनशील बनाती है और उसे समाज में एक सुसंस्कृत आदमी की तरह सभी से मिलजुल कर रहना, एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना भी सिखाती है।

प्र. क्या पारंपरिक कला को

बहुत सी पारंपरिक हस्तकलाओं को व्यवसाय के साथ जोड़कर जीवनयापन का साधन भी बनाया गया है। इससे न केवल इन विलुप्त हो रही कलाओं का पुनरुद्धार हुआ है बल्कि कलाकारों को जीविका-उपार्जन का एक साधन भी मिला है।

प्र. आधुनिक जीवन-शैली का कलाओं पर क्या असर पड़ा है, इस पर कुछ प्रकाश डालना चाहेंगे?

उ. आधुनिक जीवन-शैली का प्रदर्शनकारी कलाओं पर काफी असर पड़ा है। अब लोग पहले की तरह कला